Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

स्वच्छता, पर्यावरण और मध्यमवर्ग की भूमिका

राजेश कुमार सिन्हा[1]

[1]*रिसर्च स्कॉलर (इतिहास), गवर्नमेंट माधव आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, उज्जैन।*

स्वच्छता की भारत में एक प्राचीन परंपरा रही हैं। इस परम्परा के अनुरूप ही देश की व्यवस्थाए विकसित हैं। ये परंपरा न केवल समाज के अनुकूल हैं बल्कि पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए लाभकारी हैं। किसी भी व्यक्ति के द्वारा किया गया कोई कार्य तब तक लाभकारी नहीं हो सकता जब तक वह कार्य स्वच्छता के साथ तथा एकाग्रचित होकर न किया जाए। पंतजलि के योग सुत्र में स्वच्छता को इस प्रकार वर्णित किया गया हैं।

Swacchata is that from which there. Arises dislike i.e dispassion toward one's body and detachment towards contact with others Swacchata gives rise to purity of mind, Contentment, one-pointed, conquest of the senses and competency to attain Atma Darsharna (Self Realization)

दक्ष स्मृति में Verse 5.3 में स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार प्रयोग किया जाए इस पर चर्चा करते हुए इसके महत्व का विश्लेषण किया गया हैं तथा स्वच्छता को बाह्य तथा आंतरिक दो भागो में विभाजित करते हुए समाज को इसके अनुसरण के लिए प्रेरित करने का प्रयास दिखता है। मनुष्य जीवन के लिए स्वच्छता एक बुनियादी आवश्यकता हैं। दृश्य मन व दिमाग के शुद्ध एवं सात्विक विचार, धर्म व वाणी वर्तन की पावकता, आंतरिक स्वच्छता के आयाम हैं। बाहरी स्वच्छता में सामुहिक स्वास्थ्य, शिक्षा पर्यावरण, सामाजिक स्थिति तथा भौतिक सुंदरता निहित होती हैं। बाह्मय स्वच्छता का मूल आधार आंतरिक स्वच्छता हैं।

मुख्यतः व्यक्ति स्वंय को, अपने घर को साफ सुथरा रखते हैं। लेकिन अपने आसपास के वातावरण के प्रति गैर जिम्मेदाराना रवैया अपनाते हैं। जो कई जोखिमो को आमत्रंण देता हैं। यह हमारी बाहरी स्वच्छता को दर्शाता हैं। इसे हम व्यक्तिगत स्वच्छता से जोड़कर देख सकते हैं। आंतरिक स्वच्छता सकारात्मक विचार, अच्छे व्यक्तित्व, अच्छे चरित्र, शरीर, मन तथा आत्मा की स्वच्छता की भावना जगाता हैं। मनुस्मृति में अमतेम verse 2.176, 2.177 में हमें स्वच्छता के विषय में काफी कुछ बताया गया हैं।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

नित्य स्नात्वा सुचीः कुर्याद देवषिपितृतर्थणम।
देवताम्र्च्चन चैव समिदाधानमेंव च ।।76।।

यानि स्वच्छता की एक प्राचीन परंपरा भारतीय धार्मिक साहित्य में मिलती हैं। पुरातात्विक आधार पर स्वच्छता के विषय में सबसे महत्वपुर्ण जानकारी 2000 बी0 सी0 में भारत के पश्चिमोत्तार क्षेत्र जिसमें वर्तमान का पाकिस्तान भी शामिल हैं। में सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेष से मिलता हैं। भारतीय पंरपरा में धर्म का पाँचवा लक्षण शौच को बताया गया हैं। पंतजलि के योग सुत्र 2.32 में इसकी चर्चा हैं। -

शोचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधनानि नियमः

भारतीय ऋषियों ने व्यवस्थाएं ऐसी बनाई थी जिसमें जोर अधिक से अधिक प्रकृति के नजदीक रहने पर दिया था। इसके पीछे भी वैज्ञानिक सोच थी। उन्होने खानपान की स्वच्छता को भी शौच से जोडकर देखा। शाकाहार भोजन मनुष्य के मल को भी प्रभावित करता हैं। उन्होनें आहार-विहार के विशेष नियम बनाये। समाज में एक कहावत प्रचलित हैं। योगी जाए एक बार भेगी जाए दो बार और रोगी जाए बार बार। कहा गया हैं-स्वच्छता से समृद्धि पैदा होती हैं। कमजोर स्वास्थ्य तथा स्वच्छता देश के लोगों के आरोग्य पर विपरीत प्रभाव डालता हैं। जो देश के सामाजिक और आर्थिक परिवेश को प्रभावित करता हैं।

स्वच्छता भारत अभियान की शुरूआत तीन मुख्य लक्ष्यों को ध्यान में रखकर की गई थी। 02 अक्टबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना। ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था तथा गाँव की सफाई तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध कराना। स्वच्छ भारत अभियान विश्व के सबसे बडे स्वच्छता अभियान के रूप में प्रारंभ किया गया। जिसमें बहु आयामी अवधारणा को अपनाया गया। इसमें समुदाय की भागीदारी, व्यवहार परिवर्तन लाकर स्वच्छता के क्रियान्वयन पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया गया, जागरूकता पर विशेष जोर दिया गया। जागरूकता से मतलब समाज में रह रहे लोगों को स्वच्छता के लाभ हानि बताकर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास हैं। पंतजलि के योग के नियम में कहा गया है की आत्मा की शुद्धि ज्ञान से उपासना से, मन की स्वच्छता सत्य और श्रेष्ठ विचारो से, बुद्धि की स्वच्छता निश्चित ज्ञान से, शरीर की स्वच्छता पवित्र अन्न के सेवन से, वाणी की स्वच्छता सत्य और मधुर वचनों से, हाथ की स्वच्छता

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

दान से सेवा से, पैरों की स्वच्छता परोपकार की ओर चलने से, कानों की स्वच्छता श्रेष्ठ विचार सुनने से। गीता में भी हमें बाह्य स्वच्छता और आंतरिक स्वच्छता के विषय में चर्चा मिलती हैं।

भागवत गीता अध्याय 16 (16/1/3) स्वच्छता का संस्कृति के साथ बड़ा ही गहरा संबंध होता हैं। स्वच्छता समाज कें विभिन्न समुदाय और उन समुदायों के बिरादरियां के सास्कृतिक मूल्यों से जुड़ी होती हैं। विशेषकर लोकजीवन, धार्मिक पर्व त्यौहार और लोकोत्सव। स्वच्छता को संस्कृति के विविध आयाम प्रभावित करते हैं। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत वर्णित चार आश्रम ब्रहाचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और संन्यास जहाँ सदाचार और शिष्टाचार की स्वच्छता पर अधिक महत्व दिया गया हैं। भारतीय संस्कृति मे बौद्ध धर्म का प्रादुभाव का केन्द्र बिन्दु ही स्वच्छता हैं। अन्य धर्म की बात करे तो वह मनुष्य को ईश्वर परमात्मा देवी-देवता की शरण में जाने का आदेश देते हैं। लेकिन बौद्ध धर्म मनुष्य को अपने अंदर की स्वच्छ ज्ञान प्रज्ञा को जगाकर उसे अपना स्वामी बनने का उपदेश देता हैं। बौद्ध धर्म जिस ज्ञान प्रज्ञा को जगाकर जय पराजय से बाहर निकलकर आसक्ति का त्याग कर समभाव से अपने कर्म द्वारा लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित करता हैं। यही तो स्वच्छ ज्ञान है, बोधिसत्व हैं। इस बात की चर्चा श्रीमद् भगवत गीता के अध्याय 2 श्लोक 48 मे मिलता हैं। जहाँ कृष्ण अर्जुन को बताते हैं।

मनुष्य द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। तत्वदर्शी ऋषियों के निर्देशानुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण की समस्या नहीं उत्पन्न हो सकती हैं। स्वच्छ पर्यावरण से तात्पर्य आसपास की समस्त जैविक और अजैविक परिस्थितियों के बीच पुर्ण सामंजस्य से हैं। वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति अंतरिक्ष आकाश के महत्व पर प्रकाश डालतें हुए इनकी महता तथा पर्यावरण की स्वच्छता पर अधिक प्रकाश डाला गया हैं। जल जीवन का प्रमुख तत्व हैं। वेदों में अनेक संदर्भ में इसकी व्याख्या हैं। जल में अमृत है, जल में औषधि गुण हैं। ऋग्वेद (1.23/248) अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में जल तत्व और उसकी शुद्धता को स्वास्थ जीवन हेतु आवश्यक माना गया हैं।

शुद्धा न आपस्तन्वेक्षरन्तु। (अथर्ववेद 121.30)

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

लेकिन आज की स्थिति क्या हैं। सेंटर फॉर साइस एनवायमेंट की रिपोर्ट बताती है कि भारत की गंगा और यमुना नदियां दुनिया की 10 सबसे प्रदुषित नदियों में से एक हैं।

हमारे ऋषियों ने पृथ्वी के आधार को जल तथा जंगल से जोडकर देखा तथा उन्होने कहा "वृक्षाद् वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादत्र सम्भवः'' वृक्ष जल है और अन्न जीवन हैं। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासनकाल में वन की रक्षा सर्वोपरि थी। हिन्दु दर्शन में एक वृक्ष की तुलना मनुष्य के दस पुत्रों से की गई हैं।

दशकूप समावापीः दशवापी समोहदः।
दशहदः समः पुत्रो दशपत्र समोद्रुमः।।

घरों में तुलसी का पौधा लगाने की व्यवस्था, पीपल के पौधों को देवता का दर्जा पर्यावरण संतुलन से जुड़ा हुआ हमारा धार्मिक संस्कार था। बेलपत्र की पूजा, वट पुर्णिमा, ऑवला ग्यारस की पूजा धार्मिक अनुष्ठान लगते होगें। वास्तव में ये पर्यावरण स्वच्छता के कार्य है जो सार्वजनिक रूप से पूरे समाज के द्वारा किया जाता था और पर्यावरण को संतुलन मे रखा जाता था। हमारे धार्मिक ग्रंथो ने हमें संदेश दिया मानव स्वच्छ वायु में श्वास ले, स्वच्छ जल का पान करे, स्वच्छ (शुद्ध) अन्न का भोजन करे। वनस्पतियों द्वारा वायु शोधन का कार्य किया जाता हैं। वेदों में कहा गया हैं। कि ''मापी मैषघी हिंसीः'' अर्थात् जल की हिंसा न कर। यहाँ हिंसा से अभिप्राय प्रदूषण से हैं। (यर्जुवेद 6/22) और औषधियों की हिंसा से तात्पर्य उन्हें विनिष्ट न करने से हैं।

अग्नें। सूनवे पिता इव नः स्वस्तये आसचस्वा''

ऋग्वेद का प्रारंभ' अग्नि की स्तुति से की गई है तथा उसे पिता के समान कल्याण करने वाला कहा गया और इसे सफल जीवन का अग्रणी नेता कहा गया हैं। जो स्वंय आगे आकार समस्त परिवेश का हित करने वाला है, सामाजिक संगठन का सच्चा संचालक तथा शुभदायक हैं।

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव ऋत्विजम्।
होतारं रत्नघातमम्।। (ऋग्वेद1.1.1)

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

अग्नि का यह स्तवन समाज-संतुलन (पर्यावरण) का संकेत करता हैं। त्याग का महत्व बताता हैं। यहाँ देवऋत्विजम् से अभिप्राय है स्वंय उत्सुक होकर हित करना, त्याग की भावना से प्रेरित न होने पर स्वार्थ की प्रवृति पैदा होती हैं। और वैमनस्य बढता हैं। परिणामतया असंतुलन पैदा होता हैं।

लेकिन वर्तमान परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थो से बंधा हैं। स्वंय को अग्रणी नेता बता रहा है और सामाजिक पर्यावरण से उसे कुछ भी लेना देना नहीं हैं। तभी तो सबसे कम उम्र में "टाइम्स पर्सन ऑफ द ईयर-2019 का खिताब पाने वाली स्वीडन की 16 वर्षीय ग्रेटा थनवर्ग ने संयुक्त राष्ट्र के जलवायु सम्मेलन के दौरान संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस सहित विश्व के प्रभावशाली नेताओ से पुछा-'' आपने हमारे बचपन, हमारा सपना अपने खोखले शब्दों से छीना, हालाकिं में अभी भी सौभाग्यशाली हुँ लेकिन लोग झेल रहे है, मर रहे है, पुरा ईको सिस्टम बर्बाद हो रहा हैं।

शुद्ध पर्यावरण की चाह तो है लेकिन करते क्या है; प्राकृतिक संसाधनों का दोहन। पहले वृक्ष भी काटे जाते थे तो इस प्रकार की सैकडो स्थानों पर फिर अंकुर फुट आए। वेद का कथन है-

"अयं हित्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभाग्य।"

अर्थात हे! वनस्पतिए इस तेज कुल्हाडे ने महान सौभाग्य के लिए तुझे काटा है, तु शतांकुर होते हुए वृद्धि को प्राप्त करे। लेकिन आज स्थिति क्या है शहरी और ग्रामीण विकास के नाम पर अंधाधुन वृक्ष काटे जा रहे हैं। मुंबई की सारे कॉलोनी में मेट्रो कार शेड बनाने के लिए तकरीबन 2700 वृक्ष काटने की मंजूरी दी गई। तथा 24 घण्टे के अंदर 2134 पेड़ों को काट दिया गया हैं। The Indian Express - 6 October 2019 पेड़ तो पेड़ अब पहाड़ों को भी काटा जा रहा हैं। अरब के एक खरबपति द्वारा दुबई के समुद्र में एक टापु बनाया जा रहा हैं। जहाँ दूनिया की सबसे खूबसूरत बस्ती बनायी जाएगी । इसके लिए अरब के कई पहाड़ों को मौत के घाट उतारा जा रहा हैं। और हजारो टन पत्थर समुद्री स्थान पर प्रत्येक दिन पहुंचाया जा रहा हैं। समुन्द्र, जंगल व ग्लेशियर पृथ्वी के 90 प्रतिशत गर्मी को नियंत्रित करते हैं। तथा धरती के पर्यावरण को जीने लायक बनाये रखने में मदद करते हैं। लेकिन वर्तमान समय में प्रगति के विस्तारवादी प्रवृतियों ने अनैतिक तरीकों से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया हैं। लेकिन इस नुकसान का परिणाम कितना भयानक होगा इस बात का संज्ञान लोगों को नहीं

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

हो रहा हैं। वे तो भौतिक सुविधाओ के नाम पर अपनी ही जिदंगी बनाने मे व्यस्त हैं। मानव की भौतिक चाहत के प्रति दिलचस्पी ने उसकी गतिविधियों में वृद्धि की हैं। और शहरीकरण औद्यौगिकरण तथा जनसंख्या की वृद्धि से पर्यावरण तेजी से नष्ट होता जा रहा है और ग्रीनहाउस प्रभाव वैशविक उष्मज (ग्लोबल वार्मिग), ओजोन परत में कमी खतरनाक अपशिष्टो का निपटान हवा मे धुल कणों की मात्रा का बढना तथा जलवायु परिवर्तन अन्य कई समस्याएं सामने आ रही हैं। हाल ही आस्ट्रेलिया में लगी आग जिसने एक भयानक रूप ले लिया। तथा लाखो हेक्टेयर इलाके इसकी चपेट में आ गयें। लगभग 50 लाख हेक्टेयर इलाकों में आग लगी। तथा अनुमानित 1300 घर तबाह हो गये। इस आग के फैलने का कारण मौसम था आग 400 तापमान और तेज हवाओं के कारण ज्यादा भड़की आस्ट्रेलिया में दिसम्बर में तापमान 40.9 डिग्री तथा 41.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया था। पर्यावरण के प्रति सचेत होने का समय आ गया हैं। वैशविक स्तर पर 5 जुन 1972 में संयुक्त राष्ट्र ने स्टाकहोम में पर्यावरण से संबधित एक सम्मेलन का आयोजन कर इसकी गंभीरता को बताने का प्रयास किया 1986 में भारत ने पर्यावरण संरक्षण कानून बनाया। कानून बनाना और उन कानून को लागू कर लक्ष्य की प्राप्ति करना दोनों अलग-अलग चीज हैं। सर्वप्रथम पर्यावरण को बचाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता हैं। घर-घर जाकर लोगों को पर्यावरण बचाने हेतु जागरूक करना होगा। पाठशाला में पर्यावरण से संबंधित पाठ्यपुस्तको को लागू करना तथा इसकी महत्ता से रूबरू करवाना। वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहन देना, पुनरावृत्ति करना, पानी की खपत कम करना, बिजली का सावधानीपुर्वक उपयोग करना, रसायनिक उर्वरको का प्रयोग कम करना, सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग, वर्षा के पानी का समुचित प्रबंधन, लोगों को पर्यावरण के प्रति शिक्षित करना, पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली चीजों का कम से कम प्रयोग, कार्बन डाइ ऑक्साइड के बडे स्तर को कम करना, क्लोरो फलोरो कार्बन का कम से कम उपयोग। इसके आतंरिक अन्य कई उपाय हैं। जो हमें पर्यावरण को संरक्षित करने में मददगार हो सकते हैं। 150-200 वर्षो से मानवीय क्रियाकलापों में बडी तेजी से परिवर्तन आया। पारिस्थितिकी तंत्र की परवाह किए बिना हम उपभोक्ता वादी प्रवृति को अधिक महत्व देने लगे हैं। दैनिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति इस ऋतु परिवर्तन में तथा पर्यावरण के लिए जिम्मेदार है क्योकि मानवीय क्रियाकलापो का जलवायु पर काफी प्रभाव पडता हैं। समाधान हमारे हाथ में ही है भारत का संविधान भी पर्यावरण संरक्षण की बात करता हैं। संविधान का आर्टिकल 48 'अ' में कहा गया है कि

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

राज्य, देश के पर्यावरण संरक्षण तथा संवर्धन का ध्यान रखे। तथा अन्य जीवों की रक्षा का कार्य करेगा । 51 'अ' में पर्यावरण को नागरिकों के मूल कर्तव्यो से जोडा गया है तथा कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होगा की वह प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, व वन्य जीव है कि रक्षा करे व उसका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया रखे। तभी हम स्वच्छता तथा पर्यावरण के मूल उद्देश्य को प्राप्त कर पायेगें। जिसकी चाहत गाँधी जी रखते थे। जिस परम स्वच्छ ज्ञान की बात बुद्ध ने की थी और जिस प्रकृति को पुरूष के साथ जोड़कर इस सृष्टि की परिकल्पना वेदों, स्मृतिकारों तथा मनिषियों ने की थी। इंसान की जिदंगी के लिए सांसे जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही स्वच्छता और पर्यावरण महत्वपूर्ण है। जिसके लिए सभी का प्रयास महत्वपूर्ण है। पर्यावरण को बचाने के लिए शिक्षा का ज्ञान अति आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत थोड़ा कमजोर दिखाई देता है। इस कारण मध्यमवर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। मध्यमवर्ग समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। पूर्व का इतिहास इस बात की ओर इशारा करता है कि इस वर्ग ने देश के समाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पुनरूत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया है। निम्न वर्ग अधिकांशतः गाँव में रहता है स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति उदासिन रहता है क्योंकि उसकी समस्या दो वक्त की रोटी से ज्यादा जुडी होती है अपने परिवार का पेट भरना उसकी पहली प्राथमिकता होती है।

मध्यमवर्ग शिक्षित है और पर्यावरण के प्रति इसकी समझ गहरी है। इसका आधार और इसका फैलाव भी काफी विस्तृत है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक यह वर्ग बंगाली मध्यमवर्ग, तमिल मध्यमवर्ग, पंजाबी मध्यमवर्ग, विहारी मध्यमवर्ग, मराठी मध्यमवर्ग आदि क्षेत्रिय आधार पर विभक्त था परंतु तकनीकी विकास और वैश्विकरण के परिणाम स्वरूप मध्यमवर्ग विविध आयामों में उपस्थित है। वह शिक्षक भी है, वह डॉक्टर है, वह इंजीनियर है, वह प्रोफेसर है, वह छोटा व्यवसायी है, वह वकील है, वह साहित्यकार है, वह पत्रकार है वह बेरोजगार है, वह मैनेजर है, वह छोटा उत्पादक है, वह दफ्तर का कर्मचारी है, वह सैनिक है, वह पुलिस है, वह कवि है, वह लेखक है, वह एक्टिविस्ट है, वह सम्पन्न किसान है, वह समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, विधिवेत्ता, राजनीतिशास्त्री, धर्मशास्त्री, पुरोहित, ज्योतिषी, विद्वान, दार्शनिक और भी बहुत कुछ है। इस वर्ग को नेतृत्व करने का गौरव भी प्राप्त है। यह वर्ग समाज के लिए चितिंत भी रहता है। इस वर्ग का समाज पर प्रभाव भी है

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

और यह समाज को आन्दांलित कर स्वच्छता और पर्यावरण को नयी दिशा प्रदान करने का सामर्थ रखता है।

सन्दर्भ

1. दक्ष स्मृति 5.2, 5.3.
2. मनुस्मृति 2/1.76, 177.
3. ऋग्वेद 1.1.1.
4. यर्जुवेद 6/22.
5. अथर्ववेद 2.1.30.
6. ऋग्वेद 1.23/2.48.
7. भागवत गीता 2/48, 16/1/3.
8. पंतजलि योग सुत्र 2.41.
9. गॉधी वाड.मय भाग 1, 13 और भाग 90.
10. द इडियन एक्सप्रेस 6/10/2019.
11. डॉ बिन्देश्वर पाठक स्वच्छता का समाज शास्त्र सुलभ इंटरनेशनल, सोशल सर्विस ऑगनाईजेशन, नई दिल्ली-2013.
12. यंग इंडिया 10 दिसम्बर 1925 में बापु का लेख, 25 अप्रेल 1929 बापु का लेख।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.